विचार बिन्दु

महापुरुष वे ही होते हैं जो विभिन्न परिस्थितियों के रंगों में रंगे जाने के बाद भी अपने व्यक्तित्व की पहचान को खोने नहीं देते। –मुक्ता

कृत्रिम मेधा से डर नहीं, समृद्धि और भविष्य देखता है राजस्थान

आज की तेज गति वाली दुनिया में कृत्रिम मेधा (एआई) एक क्रांतिकारी शक्ति के रूप में उभर रही है। जहां विश्व के कई हिस्सों में लोग इसे रोजगार छिनने वाले खतरे के रूप में देखते हैं, वहीं राजस्थान इस तकनीक को समृद्धि का माध्यम मानकर आगे बढ़ रहा है। राजस्थान सरकार और उद्योग जगत की दूरदर्शिता ने एआई को न केवल अपनाया है, बल्कि इसे राज्य की सांस्कृतिक विरासत, कृषि, पर्यटन, शिक्षा और उद्योगों से जोड़कर एक उज्ज्वल भविष्य की नींव रखी है। यहां डर की कोई जगह नहीं, बल्कि अवसरों की बहार है। राजस्थान का यह दृष्टिकोण न केवल राज्यवासियों के लिए प्रेरणा है, बल्कि पूरे भारत के लिए एक मॉडल प्रस्तुत करता है।

राजस्थान की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि, पर्यटन और खनन पर आधारित है। इन क्षेत्रों में एआई का उपयोग समृद्धि के द्वार खोल रहा है। उदाहरणस्वरूप, कृषि क्षेत्र में जहां किसान वर्षा और फसल की अनिश्चितता से जूझते हैं, वहां एआई आधारित ऐप्स जैसे राज किसान और ड्रोन तकनीक ने क्रांति ला दी है। ये ऐप्स मौसम पूर्वानुमान, मिट्टी परीक्षण और फसल स्वास्थ्य विश्लेषण प्रदान करते हैं। राजस्थान के किसान बताते हैं कि पहले वे फसल नष्ट होने का दंश झेलते थे, लेकिन अब एआई से मिलने वाली सलाह से उनकी उपज 30 प्रतिशत बढ़ गई है। इसी प्रकार, बाड़मेर और जैसलमेर के रेगिस्तानी इलाकों में सौर ऊर्जा संयंत्रों के रखरखाव में एआई का उपयोग हो रहा है, जो ऊर्जा उत्पादन को दोगुना करने में सहायक है। यह दिखाता है कि एआई राजस्थान की प्राकृतिक चुनौतियों को अवसरों में बदल रहा है।

पर्यटन राजस्थान की जीवनरेखा है। जयपुर का हवा महल, उदयपुर की झीलें, जोधपुर का मेहरानगढ़ किला और जैसलमेर की सुनहरी रेत ये सभी पर्यटकों को लुभाते हैं। लेकिन पर्यटन को स्मार्ट बनाने में एआई अग्रणी भूमिका निभा रहा है। राज्य सरकार ने राजस्थान टूरिज्म पोर्टल पर एआई चैटबॉट्स विकसित किए हैं, जो पर्यटकों को व्यक्तिगत यात्रा योजनाएं सुझाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई पर्यटक राजस्थानी लोक संगीत प्रेमी है, तो एआई उसे गांव के लोक कलाकारों के कार्यक्रमों से जोड़ देगा। वर्चुअल रियलिटी (वीआर) के माध्यम से पर्यटक घर बैठे आमेर किले की सवारी कर सकते हैं। इससे न केवल पर्यटन आय बढ़ रही है, बल्कि सीजनल उतार-चढ़ाव भी कम हो रहा है। 2025 में राजस्थान में 10 करोड़ पर्यटकों का लक्ष्य एआई की बदौलत ही हासिल किया जा सकता है। यह तकनीक राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को वैश्विक पटल पर नई ऊंचाइयों तक ले जा रही है।

शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान एआई को माध्यम बनाकर युवाओं को सशक्त कर रहा है। राज्य के ग्रामीण इलाकों में जहां शिक्षकों की कमी है, वहां एआई आधारित प्लेटफॉर्म्स जैसे दीक्षा और स्वयं प्रभा ने डिजिटल क्लासरूम स्थापित किए हैं। राजस्थान के एक गांवों में लड़कियां अब एआई ट्यूटर्स से गणित और विज्ञान सीख रही हैं, जो हिंदी और राजस्थानी में व्याख्या करते हैं। ई-शिक्षा योजना के तहत 5000 से अधिक स्कूलों में एआई लैब्स स्थापित हो चुके हैं। इससे ड्रॉपआउट दर 20 प्रतिशत घटी है। युवा उद्यमियों के लिए बीकानेर और कोटा में एआई इनक्यूबेटर्स चल रहे हैं, जहां स्टार्टअप्स को फंडिंग और मेंटरिंग मिल रही है। राजस्थान विश्वविद्यालय ने एआई पर पीएचडी प्रोग्राम शुरू किया है, जो राज्य को तकनीकी विशेषज्ञों का हब बना रहा है। यह भविष्य की पीढ़ी को नौकरियों के लिए तैयार कर रहा है, न कि बेरोजगारी के डर से भर रहा है।

एआई से डरने की बजाय राजस्थान इसे अपनाकर समृद्धि की ओर अग्रसर है। यह राज्य की सांस्कृतिक गौरवशाली परंपरा को आधुनिक तकनीक से जोड़ रहा है। कल्पना कीजिए, एक ऐसा राजस्थान जहां रेगिस्तान में स्मार्ट फार्मिंग हो, किले डिजिटल गाइड्स से जीवंत हों, और युवा वैश्विक इनोवेटर्स बनें। यह सपना साकार हो रहा है। राजस्थानवासी गर्व से कह सकते हैं-एआई से डर नहीं, समृद्धि और भविष्य हम देखते हैं।

उद्योग जगत में राजस्थान का सीमेंट और टेक्सटाइल सेक्टर एआई से मजबूत हो रहा है। अल्ट्राटेक और श्री सीमेंट जैसे प्लांट्स में पूर्वानुमानित रखरखाव के लिए एआई सिस्टम लगे हैं, जो मशीनों की खराबी पहले ही बता देते हैं। इससे उत्पादन लागत 15 प्रतिशत कम हुई है। नीमराना का जापानी औद्योगिक क्षेत्र एआई रोबोटिक्स पर आधारित है, जो निवेशकों को आकर्षित कर रहा है। म्यूचुअल फंड कंपनियों जैसे एचडीएफसी और आईसीआईसीआई के राजस्थान कार्यालयों में एआई चैटबॉट्स ग्राहकों को निवेश सलाह दे रहे हैं। इससे वित्तीय समावेशन बढ़ा है, खासकर ग्रामीण महिलाओं के लिए। राजस्थान स्टार्टअप पॉलिसी 2022 ने एआई आधारित 500 स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन दिया, जिनमें से कई कृषि ड्रोन और स्वास्थ्य ऐप्स पर काम कर रहे हैं। यह राज्य को मेक इन इंडिया का केंद्र बना रहा है।

स्वास्थ्य सेवाओं में भी एआई चमत्कार कर रहा है। कोविड महामारी के दौरान जयपुर के एसएमएस अस्पताल में एआई ने सीटी स्कैन विश्लेषण कर मरीजों की पहचान तेज की। अब आरोग्य राजस्थान ऐप एआई से बीमारियों का पूर्वानुमान लगाता है। गांवों में मोबाइल वैनें एआई डिवाइसेज से ब्लड प्रेशर और डायबिटीज चेक करती हैं। इससे ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ हुई हैं। महिलाओं के लिए एआई आधारित मातृत्व ट्रैकिंग सिस्टम ने शिशु मृत्यु दर घटा दी है। भविष्य में एआई टेलीमेडिसिन राजस्थान को स्वास्थ्य हब बना देगा।

राजस्थान सरकार की नीतियां एआई को बढ़ावा देने वाली हैं। राजस्थान एआई मिशन के तहत 1000 करोड़ का फंड आवंटित हुआ है। आईआईटी जोधपुर और आईआईएम उदयपुर जैसे संस्थान एआई रिसर्च कर रहे हैं। डेटा सेंटरों का निर्माण अलवर और भिवाड़ी में हो रहा है, जो क्लाउड कंप्यूटिंग को मजबूत करेगा। हालांकि चुनौतियां हैं जैसे डिजिटल डिवाइड और साइबर सिक्योरिटी, लेकिन राज्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों से इन्हें दूर कर रहा है। 10 लाख युवाओं को एआई स्किलिंग का लक्ष्य रखा गया है।

एआई से डरने की बजाय राजस्थान इसे अपनाकर समृद्धि की ओर अग्रसर है। यह राज्य की सांस्कृतिक गौरवशाली परंपरा को आधुनिक तकनीक से जोड़ रहा है। कल्पना कीजिए, एक ऐसा राजस्थान जहां रेगिस्तान में स्मार्ट फार्मिंग हो, किले डिजिटल गाइड्स से जीवंत हों, और युवा वैश्विक इनोवेटर्स बनें। यह सपना साकार हो रहा है। राजस्थानवासी गर्व से कह सकते हैं-एआई से डर नहीं, समृद्धि और भविष्य हम देखते हैं। आइए, हम सभी इस यात्रा का हिस्सा बनें।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

राशिफल गुरूवार 26 फरवरी, 2026

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, मृगशिरा नक्षत्र दिन 12:11 तक, प्रीति योग रात्रि 10:33 तक, तैतिल करण दिन 1:37 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-कुम्भ, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-कुम्भ, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज बुध वक्री दिन 12:17 पर होगा। आज नन्दगाँव होली, फागु दशमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:24 तक, चर 11:15 से 12:40 तक, लाभ-अमृत 12:40 से 3:31 तक, शुभ 4:56 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:58, सूर्यास्त 6:22

मेष
परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

सिंह
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। घर-परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा

राजस्थान : अकादमिक हाराकीरी का प्रयास

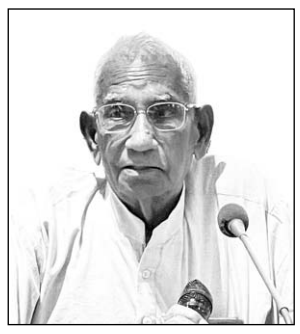

डॉ. हेतु भारद्वाज

इन दिनों एक दुर्भाग्यपूर्ण समाचार चर्चा में है कि प्रदेश की अग्रणी शिक्षण संस्थाओं महाराजा कॉलेज तथा महारानी कॉलेज, जयपुर का स्वामित्व जयपुर विकास प्राधिकरण और नगर निगम को सौंप दिया जाए क्योंकि जिस जमीन पर ये दोनों संस्थाएँ स्थित हैं वह जमीन जेडीए और नगर निगम की है। यदि यह हास्यास्पद निर्णय लिया जाता है तो उन सभी सुधी जनों को गहरी पीडा होगी जिन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के गौरवपूर्ण इतिहास का आस्वाद लिया है। कभी पूरे राजस्थान के कॉलेज इसी विश्वविद्याय से सम्बद्ध थे तथा महाराजा कॉलेज तथा महारानी कॉलेज उत्तर भारत की अग्रणी संस्थाओं में गिने जाते थे। अकादमिक दृष्टि से इन दोनों संस्थाओं का स्थान बहुत ऊँचा माना जाता था। दोनों संस्थाओं में स्नातकोत्तर कक्षाओं का शिक्षण होता था तथा शोध कार्य करने की उत्तम व्यवस्था थी। इन दोनों संस्थाओं के प्राचार्य तथा शिक्षक अपने-अपने क्षेत्र के निष्णात पंडित माने जाते थे। इन्हीं संस्थाओं से राजस्थान कॉलेज शिक्षा के निदेशक तथा विश्वविद्यालय के कुलपति निकलते थे। वर्तमान में राजस्थान विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. अल्पना कटेजा महारानी कॉलेज में शिक्षक रही है। इन संस्थाओं का प्रबंधन राजस्थान सरकार के हाथों में था।

महाराजा कॉलेज, महारानी कॉलेज, राजस्थान कॉलेज तथा कामर्स कॉलेज 1961 तक सरकारी कॉलेज थे। यह तथ्य आज की पीढ़ी को ज्ञात नहीं होगा कि कभी राजस्थान कॉलेज, जयपुर का रूतबा अलग ही था। इस कॉलेज की स्थापना सरकार ने विशेष प्रकार की शिक्षा देने के लिए की थी। इस कॉलेज में अध्यापकों की नियुक्ति राजस्थान लोकसेवा आयोग द्वारा अलग से की जाती थी तथा इस कॉलेज के अध्यापकों का वेतनमान भी कुछ ऊँचा और अलग होता था।

जुलाई, 1961 में राजस्थान विश्वविद्यालय ने निर्णय लिया कि स्नातकोत्तर कक्षाओं तथा शोध के विभाग अलग से विश्वविद्यालय परिसर में खुलें और शेष महाविद्यालय स्नातक स्तर तक की शिक्षा दे। नतीजा यह हुआ कि महाराजा कॉलेज, महारानी कॉलेज, कॉमर्स कॉलेज तथा राजस्थान कॉलेज डिग्री कॉलेज हो गये किन्तु इससे उनकी अकादमिक क्षमता में कोई फर्क नहीं आया क्योंकि उनमें पढ़ाने वाले शिक्षक वही होते थे जो स्नातकोत्तर कक्षाओं को पढ़ाते थे और शोध कराते थे। इतना ही नहीं काफी अध्यापकों का पदस्थापन इन कॉलेजों में होता था, और वे स्नातकोत्तर कक्षाएँ लेते थे और शोध भी कराते थे।

इस प्रकार यह व्यवस्था ऐसी थी जिससे महाविद्यालयों की अकादमिक गरिमा कम नहीं हुई। कुल मिलाकर कॉलेज तथा स्नातकोत्तर विभाग विश्वविद्यालय को पूर्ण इकाई बनाते थे। अकादमिक दृष्टि से यह व्यवस्था विश्वविद्यालय का उच्च स्तर बनाने में सफल रही। कभी यह आलम था कि राजस्थान विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में देश के जाने-माने विद्वान शोभित थे। यहाँ से अनेक अध्यापक जे.एन.यू. में गये, दूसरे विश्वविद्यालयों के कुलपति बने तथा राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थानों के मुखिया बने। इसी गरिमा का नतीजा है कि सारी जर्जरता के बावजूद राजस्थान विश्वविद्यालय की छवि आज भी गौरवमय बनी हुई है।

यदि केवल इस आधार पर कि जमीन का स्वामित्व जेडीए तथा नगर निगम का है। महाराजा कॉलेज तथा महारानी कॉलेज का स्वामित्व जेडीए और नगर निगम को दे दिया जाता है तो यह विश्वविद्यालय का अंग भंग कर इन संस्थाओं को लिपिकों के हाथ में देना होगा, जिनका अकादमिक गुणवत्ता से कोई लेना देना नहीं है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आज भी प्रदेश की युवतियों की उच्च शिक्षा के लिए पहली पसंद महारानी कॉलेज है तथा विज्ञान के युवक महाराजा कॉलेज में प्रवेश पाकर कृतकृत्य होते हैं। इसलिए कम से कम एक सदी से चल रहे इन संस्थानों की मिल्कियत बदलना इन संस्थानों को नष्ट करने का उपक्रम होगा। यह प्रकारान्तर से राजस्थान विश्वविद्यालय को पंगु बनाना होगा और उसकी अकादमिक गरिमा को नष्ट करना होगा। बेहतर है, इस विश्वविद्यालय को बिखरने से पूर्व बंद कर दिया जाए। भले यह अकादमिक हाराकीरी का एक विचित्र उदाहरण होगा।

–डॉ. हेतु भारद्वाज,
प्रख्यात साहित्यकार

ऑरोविल - उषानगरी

सूर्य प्रताप सिंह राजावत

हाल ही में 26 जनवरी को दिल्ली में रिपब्लिक डे परेड में मातृ मंदिर को दिखाया गया। मातृ मंदिर ऑरोविल के बीच में है। मीरा अल्फासा, जिन्हें श्रीमां के नाम से जाना जाता है, श्री अरविंद की आध्यात्मिक सहयोगी का ड्रीम प्रोजेक्ट ऑरोविल-उषा नगरी के नाम से जाना जाता है। ऑरोविल को 50,000 लोगों के शहर के तौर पर देखा जा रहा है। ऑरोविल एक उभरता हुआ टाउनशिप है। अभी ऑरोविल में भारत और दुनिया भर के करीब 60 देशों से 3,300 मानद वॉलंटरी वर्कर हैं। यह दक्षिण भारत के तमिलनाडु के एक ग्रामीण इलाके में है। यह 13 गांवों से घिरा हुआ है, जिनकी आबादी लगभग 40,000 है।

ऑरोविल के लोग सुपरमेंटल योग करते हैं। सुपरमेंटल योग शारीरिक बदलाव से जुड़ा है। अरविंद के अनुसार, इंसान विकास की प्रक्रिया में बदलाव के दौर से गुज़र रहे हैं। मनुष्य अंतिम रचना नहीं है, मनुष्य के बाद अतिमानसिक शक्ति का आविर्भाव होगा। श्रीअरविंद कहते हैं कि समानता, आज़ादी और भाईचारे की त्रिमूर्ति सिर्फ़ भाईचारे की बुनियाद पर ही मुमकिन है। यह सिर्फ़ ट्रांसफ़ॉर्मेशन के प्रोसेस से ही हासिल किया जा सकता है। अरविंद सुपरमाइंड को नीचे लाने के लिए तीन तरह के ट्रांसफ़ॉर्मेशन बताते हैं, यानी साइकिक ट्रांसफ़ॉर्मेशन, स्पिरिचुअल ट्रांसफ़ॉर्मेशन और सुपरमेंटल ट्रांसफ़ॉर्मेशन।

अरविंद सुपरमैन के बारे में बात करते हैं। यही शब्द वेस्टर्न फ़िलॉसफ़र फ्रेडरिक नीत्शे ने भी इस्तेमाल किया है। लेकिन श्रीअरविंद और फ्रेडरिक नीत्शे द्वारा इस्तेमाल किए गए मतलब में एक बुनियादी फ़र्क है। वेस्टर्न फ़िलॉसफ़र का सुपरमैन, आज के इंसान केमहिमामंडन का प्रतीक है जो कि असुर से कम नहीं है। दूसरी ओर, श्रीअरविंद सुपरमैन शब्द का इस्तेमाल उच्च और बदली हुई चेतना के लिए करते हैं जिसमे नया इवोल्यूशनरी मानव होगा। श्रीअरविन्द सुपरमैन के सन्दर्भ में लिखते हैं कि अगर तुम (सुपरमैन) सारी इंसानियत के गुलाम नहीं हो सकते, तुम उनके मालिक बनने के लायक नहीं हो और अगर तुम वशिष्ठ की गाय की तरह अपने स्वभाव को नहीं बना सकते जो सारी इंसानियत की इच्छा पूरी करे, तो तुम्हारे शेर जैसे सुपरमैन होने का क्या फायदा?

ऑरोविल कई एक्टिविटीज़ में शामिल है, लेकिन ऑरोविल की एक खास एक्टिविटी यूथ इंटरनेशनल एक्सचेंज प्रोग्राम है, जहाँ दुनिया भर से स्टूडेंट्स आते हैं और श्रीअरविन्द और श्रीमाँ के विज़न के हिसाब से इंसानियत के भविष्य के बारे में जानने के लिए बातचीत करते हैं। यह कोई बढ़ा-चढ़ाकर कहना नहीं होगा कि श्री अरविन्द की लाइफ डिवाइन मैग्नम ओपस इंसान के आध्यात्मिक भविष्य के विज़न को समझाती है जो वैदिक फिलॉसफी पर आधारित है।

श्रीमाँ के ये शब्द ऑरोविल के मकसद और उद्देश्य को बेहतर ढंग से समझने में मदद करते हैं - हम किसी पंथ, किसी धर्म के खिलाफ नहीं लड़ते हैं। हम किसी भी तरह की सरकार के खिलाफ नहीं लड़ते हैं। हम किसी भी सामाजिक वर्ग के खिलाफ नहीं लड़ते हैं। हम किसी भी देश या सभ्यता के खिलाफ नहीं लड़ते हैं। हम बंटवारे, बेहोशी, अज्ञानता, जड़ता और झूठ से लड़ रहे हैं। हम धरती पर एकता, ज्ञान, चेतना, सत्य स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं, और हम उन सभी से लड़ते हैं जो प्रकाश, शांति, सत्य और प्रेम की इस नई रचना के आने का विरोध करते हैं।

ऑरोविल अपनी एक खास बात के लिए भी जाना जाता है कि यहाँ लोगों के बीच पैसे का कोई लेन-देन नहीं होता है। 28 फरवरी, 1968 को, ऑरोविल की नींव श्री माँ ने दुनिया भर के सभी उपमहाद्वीपों और बड़े महासागरों और समुद्रों से इकट्ठा किए गए पानी और मिट्टी से रखी थी। झुंझुनू, राजस्थान के केशव देव पोद्दार ने इस प्रोजेक्ट में अहम भूमिका निभाई। श्री माँ ने उन्हें नया नाम नवजात दिया। ऑरोविल में आकर्षण के केंद्रों में से एक मातृमंदिर है। श्री माँ मातृमंदिर को "इंसान की परफ़ेक्शन की चाहत के लिए भगवान के जवाब का प्रतीक" बताती हैं।

ऑरोविल, श्रीअरविन्द सोसाइटी का प्रोजेक्ट था, जिसकी श्रीमाँ हमेशा प्रेसिडेंट हैं। 1980 से पहले, श्री अरविन्द सोसाइटी के पास ओरोविल पर मालिकाना हक था। 1980 में, भारत सरकार ने ऑरोविल इमरजेंसी प्रोविज़न एक्ट 1980 पास किया, जिसके तहत उसने ऑरोविल का मैनेजमेंट अपने हाथ में ले लिया। आज यह पार्लियामेंट से पास हुए ऑरोविल फ़ाउंडेशन एक्ट 1988 के तहत चलता है। एम्बलम्स एंड नेम्स (प्रिवेंशन ऑफ़ इम्प्रॉपर यूज़) एक्ट, 1950, ऑरोविल के सिंबल के गलत इस्तेमाल को रेगुलेट करता है, जिसका ज़िक्र एक्ट 1950 के शेड्यूल की एंट्री नंबर 23 में है। ऑरोविल के प्रतीक को बिना इजाज़त इस्तेमाल पर सज़ा का प्रोविज़न है। भारत में ऑरोविल का महत्त्व और गंभीरता इसी बात से देखी जा सकती है कि इसी कानून के तहत की एंट्री नंबर 3 पर राष्ट्रध्वज के अनाधिकृत उपयोग पर सजा का प्रावधान है।

यह बहुत दु:ख की बात है कि भारत में ज़्यादातर लोगों को ऑरोविल के बारे में पता नहीं है। हालाँकि इसे इंटरनेशनल लेवल पर सही माना गया है। ऑरोविल को 1966, 1968, 1970, 1983, 2007 में यूनेस्को के जनरल कॉन्फ्रेंस का समर्थन प्राप्त हुआ है। ऑरोविल का मुख्य विषय यह है कि पृथ्वी पर भाईचारे और समरसता की प्राप्ति के बिना सामुदायिक सद्भाव स्थापित नहीं किया जा सकता है यह केवल आध्यात्मिक परिवर्तन के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। श्रीअरविन्द और श्री माँ सिखाते हैं कि आध्यात्मिकता कोई दूसरी दुनिया का मामला नहीं है। कोई भी भागवतचेतना के काम में सहयोग दे सकता है। कोई भी भागवतचेतना के अभिव्यक्त होने का निमित्त बन सकता है। इस दुनिया का एक मकसद है। वह मकसद अनजाना नहीं है। दुनिया विकास के संकट का सामना कर रही है। उच्च चेतना के अगले लेवल पर पहुँचना ही धरती की समस्याओं का हल है।

–सूर्य प्रताप सिंह राजावत,
सचिव, श्रीअरविन्द सोसाइटी राजस्थान

नीमकाथाना : अरावली संरक्षण यात्रा में चिड़ीमार पहाड़ बचाने की आवाज उठी

- **गुजरात से दिल्ली जा रही अरावली संरक्षण यात्रा सीकर जिले के हरियाणा सीमा से सटे अंतिम गांव स्यालोदड़ा ग्राम पंचायत पहुंची**
- **यात्रा दल ने अवैध खनन, अवैध क्रेशरों तथा कृषि व श्वसन, खाद्यान्न में फैल रहे भारी धूल प्रदूषण और धूलजनित बीमारियों की वास्तविक स्थिति जानी**
- **अरावली संरक्षण यात्रा टीम ने क्षेत्र में लगातार बढ़ रही धूलजनित बीमारियों पर गहरी चिंता जताई और स्थिति पर अफसोस भी व्यक्त किया**

नीमकाथाना, (निसं)। बुधवार को गुजरात से दिल्ली जा रही अरावली संरक्षण यात्रा सीकर जिले के हरियाणा सीमा से सटे अंतिम गांव स्यालोदड़ा ग्राम पंचायत पहुंची। इस यात्रा का नेतृत्व पीपुल्स फॉर अरावली की संस्थापक नीलम आहुलवालिया कर रही है। यात्रा दल के स्यालोदड़ा पहुंचने पर ग्रामवासियों एवं सामाजिक संगठनों ने माला पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर यात्रा दल ने आसपास के क्षेत्र के लोगों से संवाद कर चिड़ीमार पहाड़ में चल रहे अवैध खनन, अवैध क्रेशरों तथा कृषि व श्वसन, खाद्यान्न में फैल रहे भारी धूल प्रदूषण और उससे हो रही धूलजनित बीमारियों की वास्तविक स्थिति जानी।

यात्रा टीम ने क्षेत्र में लगातार बढ़ रही धूलजनित बीमारियों पर गहरी चिंता जताई और स्थिति पर अफसोस भी व्यक्त किया। लोगों ने बताया कि चिड़ीमार पहाड़ राजस्थान-हरियाणा की सीमा पर स्थित है, एक ओर यह क्षेत्र राजस्थान के वन क्षेत्र (फॉरेस्ट पार्ट) में आता है, जबकि दूसरी ओर हरियाणा में इसे ग्राम पंचायत के राजस्व रिकॉर्ड में दर्शाया गया है। इसी कानूनी विसंगति का लाभ उठाकर हरियाणा सरकार के अधीन क्षेत्र में बड़े पैमाने पर वैध एवं अवैध खनन किया जा रहा है। वक्ताओं ने कहा कि चिड़ीमार पहाड़ की वास्तविक ऊंचाई लगभग 500 से 600 मीटर होने तथा एनसीआर क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद, कम ऊंचाई दर्शाकर पर्यावरणीय नियमों की अनदेखी करते हुए खनन पट्टा जारी है, जिससे एनसीआर के फेफड़े कहे जाने वाले अरावली पर्वतमाला को हरियाणा सरकार गंभीर नुकसान पहुंच रहा है।

स्यालोदडा गांव के ग्रामीणों एवं कांग्रेस के पदाधिकारियों आरोप लगाया कि स्यालोदड़ा राजस्थान क्षेत्र में अवैध रवन्ना की आड़ में चिड़ीमार पहाड़ से अवैध खनन कर अवैध क्रशरों के माध्यम से इतना भयंकर धूल प्रदूषण फैलाया जा रहा है कि आमजन का जीवन और जन स्वास्थ्य व्यवस्था खतरे में पड़ गई है। इस अवसर पर सर्वोच्च न्यायालय एवं केंद्र सरकार से मांग की गई कि एनसीआर क्षेत्र में वैध एवं अवैध दोनों प्रकार के खनन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए, चिड़ीमार पहाड़ को बचाया जाए, सभी राज्यों में अरावली की एक समान परिभाषा लागू की जाए, अवैध रवन्ना, अवैध क्रशर और अवैध खनन पर सख्त कार्रवाई की जाए।

कार्यक्रम को आदिवासी एकता परिषद के अध्यक्ष अशोक चौधरी, पर्यावरण मित्र कैलाश मीणा (भराला) सहित अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं ने संबोधित किया। स्वागत संबोधन जयभगवान शर्मा एवं बिशेश्वर सैनी ने दिया। यात्रा दल के समक्ष ग्रामीणों ने भी अपनी समस्याएं और अनुभव साझा किए।

इस अवसर पर ग्रामवासियों में राजू सैनी, रामेश्वर सैनी, शिंभू डाबला, रमेश छावड़ी, सहमाल चंदेला, बाबूलाल, जयराम सैनी, अमरसिंह डाबला, मलखान सिंह बांयल, रामनिवास सैनी, डालूराम होल्दार, राजेश किरोड़ीवाल, शंकर लाल सैनी, कमलेश सैनी, महावीर वैद्य, जयराम हलवाई, गिरवर सैनी, रोहिताश सैनी, लाल सिंह, बद्री सैनी, निहाल चंद सैनी, राजेश चंदेला, लीला राम सैनी, उमराव ठाकुर, अशोक कुमावत, कालूराम सैनी, बिहारीलाल सैनी, अशोक शर्मा सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे। तत्पश्चात यात्रा हरियाणा के बांयल गांव में प्रवेश करते हुए दिल्ली प्रस्थान कर गई।

झालावाड़ : पिचकारी वाली सॉफ्ट ड्रिंक गिरने से बच्चे की एक आंख की रोशनी गई

दस दिन पहले नौ साल के बच्चे की आंख में सॉफ्ट ड्रिंक गिरने से कॉर्नियल अल्सर हो गया था, जिसे परिजनों ने कई अस्पतालों में दिखाया था

- **बच्चे को परिजन कोटा के मेडिकल कॉलेज के एमबीएस अस्पताल लेकर पहुंचे, उपचार जारी**
- **चिकित्सकों के अनुसार आंख में सुधार होता है तो ठीक है, अन्यथा कॉर्निया ट्रांसप्लांट (केराटोप्लास्टी) करना होगा**
- **'संभवतया : इस प्रोडक्ट में केमिकल होगा, इससे बच्चे की आंख को नुकसान पहुंचा'**

कोटा, (निसं)। बाजार में मिल रही पिचकारी वाली सॉफ्ट ड्रिंक का घातक असर सामने आया है। इस सॉफ्ट ड्रिंक से झालावाड़ जिले के सारोला कला निवासी 9 वर्षीय बच्चे मनीष धाकड़ की आंख चली गई। उसके बाद आंख में कॉर्नियल अल्सर हो गया। यहां तक कि उसे एक आंख से दिखना बंद हो गया। उसे कॉर्निया ट्रांसप्लांट की नौबत आ गई। बच्चा बुधवार को मेडिकल कॉलेज के एमबीएस अस्पताल के नेत्र रोग विभाग में पहुंचा था, जहां सीनियर प्रोफेसर डॉ. जयश्री सिंह ने मनीष को देखा।

पिता हुकुमचंद धाकड़ ने बताया कि बच्चों ने पास की दुकान से पिचकारी वाली सॉफ्ट ड्रिंक ली थी। मनीष इससे खेल रहा था कि अचानक पिचकारी चलाते समय आंख में सॉफ्ट ड्रिंक चली गई। उसे काफी जलन हुई। उसने आंख मसली तो दिखाना बंद हो गया। परिजनों ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सारोला कलां, फिर झालावाड़ अस्पताल में दिखाया, लेकिन सुधार नहीं होने पर कोटा लाए। सीनियर प्रोफेसर डॉ. जयश्री सिंह ने बताया कि बच्चे को अभी आई ड्रॉप्स प्रेसक्राइब की है। कुछ दवा भी दी है। आंख में कॉर्नियल अल्सर हो गया है। इससे धीरे-धीरे कॉर्नियल वैस्कुलराइजेशन हो गया। यह कॉर्निया को ऑक्सीजन नहीं मिलने पर होता है। इसके बाद ब्लड वेसल्स ने काम करना बंद कर दिया। कॉर्निया की पारदर्शिता खराब होने लगती है। यह मनीष के साथ भी हुआ। आंख में सुधार होता है तो ठीक है अन्यथा कॉर्निया ट्रांसप्लांट (केराटोप्लास्टी) करना होगा। संभवतया: इस प्रोडक्ट में केमिकल होगा। इससे बच्चे की आंख को नुकसान पहुंचा। उन्होंने ऐसे प्रोडक्ट पर बैन लगाने और स्कूलों के बाहर बिक्री नहीं होने की बात भी कही है।

डॉ. जयश्री सिंह का कहना है कि मनीष की आंख में यह सॉफ्ट ड्रिंक करीब 10 दिन पहले गई थी। परिजन आयुर्वेदिक दवा आंख में डाल रहे थे। इससे आंख सही नहीं हुई। यह दवा नहीं डालनी चाहिए थी। इसके दुष्परिणाम हो सकते हैं क्योंकि एक तरफ केमिकल चला गया और दूसरी तरफ आपकी दवा डाल रहे हैं। परिजनों को उम्मीद थी कि आंख सही हो जाएगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ। बच्चे को एक आंख से दिखना बंद हो गया। उसकी पढ़ाई डिस्टर्ब हो गई। इसके बाद परिजन बालक को कोटा लाए। उन्होंने ओपीडी में दिखाया। इसके बाद आंख की जांच की गई है।